Vol.8 May 2015 No.10
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation

ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

आनन्द का सूत्र

–आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

सत्य को ग्रहण करने में,
सर्वदा उद्‌यत रहना चाहिए।
सत्य है ब्रह्म, सत्य ही आत्मा,
सत्य है धर्म।
सार्वभौमिकता सत्य है,
सत्य तप्ति है, असत्य प्यास।
सत्य लक्ष्य है, असत्य भटकाव।
सत्य पूर्णता है, असत्य अभाव।
स्व स्मति–सुख है, ज्ञान है।
स्व विस्मति–दुःख है, अज्ञान है।
काम में, क्रोध में, लोभ में
अहंकार व मोह में,
पद और प्रतिष्ठा में
सुख नहीं, आनन्द नहीं।
अज्ञान की पगडंडियों में भटकना ही
आत्म हनन है,
आत्म हत्या है।
अज्ञान के प्रति
अहर्नि ा जागरण ही
आनन्द का सूत्र है।
आत्म स्मति है
आत्म तप्ति है
सत्य है और ाा वत है।

(महर्षि दयानन्द धाम) महादेव
सुन्दरनगर, (जि.) मण्डी (हि.प्र.)–174401

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:

1. Shri S.K.Chawla C2B/27A, Janakpuri, New Delhi-110058 Rs.1100/-
2. Shri G.R.Gupta, A2/219, Janakpuri, New Delhi-110058 Rs 500/-
3. Shri Jasvinder Singh C2A/40, Janakpuri, New Delhi-110058. Rs. 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan May 2015 Vol. 8 No.10
वै ाख-ज्येष्ठ 2072 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. आनन्द का सूत्र 2
-आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्न 7
-डॉ. भारत भूषण
4. चिंतन और कर्म के समन्वय-महात्मा हंसराज 8
-प्रेमलता गर्ग
5. योग 10
-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
6. दलितों को न्यूनतम योग्यता के आधार पर मिले नौकरी 13
(अम्बेडकर जयन्ती पर वि ोष)
7. प्रचारकों के प्रेरणात्मक एवं अनुकरणीय कार्य *15*
-सी. ए. राजकुमार
8. भारत माता के वीर आद र् सपूत ाहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' 20
-मनमोहन कुमार आर्य
9. अब प चिम की समझ में आने लगा है कि भारत में गाय को क्यों माता माना जाता है? 25
-विनित नारायण
10. Vegetarianism and the Vedas : Travesty of Facts *29*
11. Why Both Mind And Body Need Looking After 33
-Sri Ashutosh Maharaj
12. Kriyatmak Yaga Prashikshan Shivir (Rojar) 34
-Sri B. D. Ukhul

संपादकीय

हमारा इतिहास कैसा हो?

किसी दे ा का इतिहास ऐसा होना चाहिए जिसमें उस दे ा के उत्थान-पतन के साथ उसकी संस्कृति और उदात्त चरित्र वाले महापुरुषों की झलक हो। उसमें अतीत के गौरव और भविष्य के लिए आ ाा की किरण दिखाई देनी चाहिए।

सर्वप्रथम यह जानना आव यक है कि इतिहास किसे कहते हैं? इस विषय में भारतीय विद्वानों के कुछ मत नीचे उद्धत किए गए हैं-

1. आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य ने, जो चाणक्य नाम से विख्यात हैं अपने अर्थ ाास्त्र (अ. 5) में लिखा है-

पुराणम्-इतिवत्तम्-आख्यायिका-उदाहरणं धर्म ाास्त्रं अर्थ ाास्त्रं चेतिहासः।

अर्थात् पुराण, इतिवत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्म ाास्त्र, अर्थ ाास्त्र ये छः तत्व इतिहास कहलाते हैं।

2. आचार्य ाौनक के बहद् देवता (4/46) में कहा गया है कि-

इतिहासः पुरावत्तं ऋषिभिः परिकीर्त्यते।

इतिहास में पुरावत्त (पुराने वत्तान्त) का ऋषियों के द्वारा वर्णन किया जाता है।

3. भट्ट भास्कर (13वीं सदी विक्रमीय) ने कहा हैं-

ऐतिह्य ाब्देनेतिहासपुराणं गह्यते।

अर्थात् ऐतिह्य ाब्द से इतिहास व पुराण का ग्रहण होता है।

4. आचार्य दुर्गकृत निरुक्त भाष्यवत्ति (2/10) में कहा है कि-

इति हैवमासीदिति यः कथ्यते स इतिहासः।

आचार्य दुर्ग कृत निरुक्त की भाष्यवत्ति में लिखा है कि नि चय से ऐसा हुआ था ऐसे कथन को इतिहास कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि जो व्यक्ति इतिहास की इन परिभाषाओं को जानते हैं वे इतिहास के वास्तविक स्वरूप में परिचित हैं। राष्ट्रीय ाैक्षिक अनुसंधान और प्र ाािक्षण परिषद की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समय-समय पर परिवर्तन किए जाते रहे हैं। आरंभ में इन पुस्तकों का लेखन वामपंथी विचारधारा वाले इरफान हबीब, डॉ. सती ाचंद्र, के. एम. श्री माली, डी. एन. झा, रफ़ीक जक़ारिया, रोमिला थापर आदि विद्वानों द्वारा किया गया था। इनके द्वारा लिखित इतिहास पर रॉथ, ह्विटने, वेबर,

मैक्समूलर, कीथ, मेकडानल आदि पा चात्य लेखकों का प्रभाव रहा है। इन्होंने पा चात्य विद्वानों का अन्धानुकरण किया। ये पा चात्य विद्वान भारत में मैकाले की ि ाक्षा-योजना के अंग थे। मैकाले की ि ाक्षा योजना का उद्दे य ऐसे युवकों को तैयार करना था जो ि ाक्षित होकर केवल रक्त, रंग और नाम से तो भारतीय हों परन्तु आचार-विचार से अंग्रेजी सभ्यता के पुजारी बन जाएँ। इस प्रयोजन के लिए श्री बॉडेन ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में हमारे इतिहास, और धर्मग्रन्थों को विकृत करने के लिए संस्कृत और वेदों के अध्ययन के लिए ब्रॉडेन पीठ की स्थापना की थी। इस विषय की पष्ठभूमि को समझने के लिए मोनियर विलियम्स द्वारा संकलित संस्कृत-इंग्लि ा डिक ानरी की भूमिका के निम्नलिखित अं ा पर नजर डालिए।

The special object of his (Boden's) munificent bequest was to promote the translation of the scriptures into Sanskrit, so as to enable his countrymen to proceed in the conversion of the natives of India to the Christian religion.

श्री बॉडेन के उदार दान का प्रयोजन ईसाइयों के धर्मग्रंथों का संस्कृत में ऐसा अनुवाद कराना था जिससे उनके दे ावासी भारतीयों को ईसाइयत में धर्मान्तरित करने में संलग्न हो सकें। इसी उद्दे य से पा चात्य विद्वानों ने हमारे इतिहास को भी विकृत करने का प्रयास किया जिसका अन्धानुकरण हमारे इतिहासकार आज तक करते आ रहे हैं। इस विषय में भारतीय इतिहास के रचयिता वैदिक विद्वान् पं. भगवद्दत्त जी के विचार में पा चात्य इतिहासकारों को यह भय था कि यदि आर्य इतिहास का सत्य स्वीकृत हो गया तो यहूदियों और ईसाइयों के तौरेज, जबूर, इंजील आदि के मत पर से लोगों का वि वास उठ जाएगा और संसार वेदों की ओर झुकेगा। बड़े आ चर्य की बात है कि हमारे इन वामपन्थी इतिहासकारों ने सन् 1975 में यह विवाद आरंभ किया कि क्या कभी महाभारत युद्ध हुआ भी था या नहीं। यदि हुआ भी था तो रामायण काल से पहले हुआ था या बाद में। ऐसे बयान देकर उन्होंने इतिहास विषयक अज्ञानता का ही परिचय दिया।

इधर राष्ट्रीय ौक्षिक अनुसंधान और प्र ािक्षण परिषद् ने ग्यारहवीं कक्षा का 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' नामक पुस्तक श्री सती ाचन्द्र से लिखवाई जिसमें लेखक ने गुरु तेग-बहादुर और गुरु गोविन्द सिंह के बारे में किसी फारसी

ग्रंथ का हवाला देकर लिख दिया कि गुरु तेगबहादुर ने असम से लौटने के बाद ोख अहमद सरहिंद के अनुयायी हाफिज़ आदम के साथ मिलकर पूरे पंजाब में लूटपाट मचा दी थी और पंजाब को उजाड़ दिया था। एक अन्य बेहूदा बात डॉ. सती ाचंद्र ने यह लिखी कि सिख परंपरा के अनुसार गुरु को फाँसी उनके परिवार के कुछ लोगों की साजि ा का परिणाम थी। वे लोग गुरु के उत्तराधिकार के विरुद्ध थे। इन बातों का ज्ञान डॉ. सती ाचंद्र को कहाँ से हुआ? गुरु तेगबहादुर की ाहादत का सबसे बड़ा ऐतिहासिक साक्ष्य है उनके पुत्र गुरु गोविंद सिंह की आत्मकथा 'विचित्र नाटक'। अपनी आत्मकथा में उन्होंने अपने पिता के बलिदान की घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है ' तिलक-जनेऊ की रक्षा के लिए और साधुजनों की रक्षा के लिए उन्होंने अपना ाी ा दे दिया, पर उफ तक नहीं की। यह कार्य उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए किया।

ि ाक्षा मंत्रालय ने जब राष्ट्रीय ौक्षिक अनुसंधान और प्र ाक्षण परिषद् को ऐसे आपत्तिजनक अं ाों को निकालने का आदे ा दिया तो अनेक विरोधी दलों ने सरकार पर ि ाक्षा के तालिबानीकरण और भगवाकरण करनेका दोष लगाया।

दे ा के कई जाने-माने इतिहासकारों ने एन सी ई आर टी की पुस्तकों से ऐसे अं ाों को हटाए जाने का विरोध किया जहाँ वेदों में गोमांस भक्षण का उल्लेख किया गया था। इस विषय में रोमिला थापर को सख्त ऐतराज था। उन्होंने ातपथ ब्राह्मण, बहदारण्यक उपनिषद् आदि से कुछ विवरणों की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार दिल्ली वि ववविद्यालय के इतिहासकार डॉ. डी. एन. झा ने 'बीफ इन वेदाज़' नामक पुस्तिका में वेदों में गोमांस भक्षण को सिद्ध करने का प्रयास किया। इसका उत्तर 'ब्रह्मा ाा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउंडे ान' की ओर से 'नो बीफ इन वेदाज़' नामक पुस्तिका द्वारा दिया गया।

परिषद् की इतिहास की पुस्तकों में आर्यों के मूलस्थान, हिन्दू धर्म की सनातनता, सिन्धुघाटी सभ्यता और कृष्ण तथा महाभारत की ऐतिहासिकता आदि ऐसे संदर्भ है जिनका सही विवरण देने का प्रयास किया गया है।

वस्तुतः स्वाधीन भारत में दे ा के प्राचीन इतिहास को राष्ट्रीय गौरव के परिप्रेक्ष्य में देना उचित होगा जिससे छात्रों के मन में अपने अतीत के प्रति गर्व और सम्मान की भावना पैदा हो और वे उससे प्रेरणा ग्रहण करें।

संपादक

सांख्य द नि (अध्याय-1, सूत्र-88)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पूर्व सूत्र में दी गई उसी आ ंका का समाधान सूत्रकार एक अन्य प्रकार से करते हैं, सूत्र है-

उत्पत्तिवद्वाऽदोषः ।।88।।

अर्थ - (वा) अथवा (उत्पत्तिवत्) उत्पत्ति के समान (अदोषः) दोष नहीं। भावार्थ - कोई भी वस्तु जब अपने कारणरूप से कार्यरूप में परिणत होती है, उस अवस्था को उत्पत्ति या अभिव्यक्ति कह सकते हैं। इन दोनों में कोई वि ोष अन्तर नहीं है। इनमें अन्तर केवल इतना ही है कि 'उत्पत्ति' ाब्द का तात्पर्य यह है कि कार्य की अवस्था में आने से पहले वह पूर्णतया असत् था परन्तु 'अभिव्यक्ति' का अभिप्राय यह नहीं है। तब उस कार्य की कारण रूप में सत्ता स्वीकार की जाती है। उत्पत्ति से पूर्व कार्य सत् है अथवा असत् इसकी वास्तविकता को तो हेत्वन्तरों से जाना जा सकता है। और इसकी सिद्धि के लिए 'उपादान नियम' आदि हेतुओं का निर्दे ा कर दिया गया है। अब प्र न यह होता है कि जब कार्य की उत्पत्ति हो ही गई है तब पुनः उसी रूप में उसी कार्य की उत्पत्ति की आव यकता है या नहीं? उत्तर होगा कि आव यकता नहीं है। इसी प्रकार कार्य की 'अभिव्यक्ति' कहने पर वस्तुस्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। एक बार अभिव्यक्ति होने पर उसी अवस्था में, उसी रूप में पुनः उसकी आव यकता नहीं रहती। इसलिए उत्पत्ति के समान अभिव्यक्ति में भी कोई दोष नहीं है।

असत्कार्यवाद वस्तु की उत्पत्ति से पूर्व और वस्तु के नष्ट हो जाने के बाद की अवस्थाओं को उस वस्तु का प्राग्भाव तथा प्रध्वंस कहा जाता है, और इन अवस्थाओं में कार्य की सत्ता को स्वीकार नहीं किया जाता। परन्तु सत्कार्यवाद में इन अवस्थाओं को यथाक्रम अनागत और अतीत नाम दिया गया है तथा इन अवस्थाओं में भी कार्य की सत्ता कारणरूप में स्वीकार की गई है। यही दोनों वादों का अन्तर है। यद्यपि असत्कार्यवाद में उत्पत्ति से पूर्व कार्य की बुद्धि-सिद्धसत्ता स्वीकार की गई है। इसका मतलब यह है कि जब किसी उपादान से कोई कार्य उत्पन्न किए जाने को होता है, तब उसका िल्पी पहले से इस बात को जानता है कि इस कारण सामग्री से इस ढंग या इस आकार-प्रकार का कार्य उत्पन्न होना है। कार्य की यह जानकारी कारण सामग्री में उस कार्य की बुद्धि- सिद्ध सत्ता कही जाती है।।88।।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

चिंतन और कर्म के समन्वयक– महात्मा हंसराज

–प्रेमलता गर्ग

महात्मा हंसराज भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के ऐसे नायक हैं, जिनका समूचा आचरण रचनात्मक है। वे यदि किसी परम्परा या किसी जनविरोधी कानून का विरोध भी करते थे तो उसमें भी रचनात्मकता का पुट होता था। उनके पास परिस्थितियों से उत्पन्न प्रत्येक समस्या का लोकतांत्रिक समाधान उपलब्ध था। डी.ए.वी. आन्दोलन को अपना सर्वस्व समर्पित करने के बावजूद उनके आचरण में ले ामात्र भी निरंकु ाता नहीं थी। वे अपना निर्णय कभी भी अपने साथियों पर नहीं थोपते थे। संस्था के लिए कोई भी निर्णय या किसी भी नई पहल में वे अपने सहयोगियों के मतों और विचारों को प्राथमिकता देते थे। यदि किसी विचार से उनकी असहमति होती थी तो वे उसका तर्कसम्मत विकल्प प्रस्तुत करते थे।

महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व की इस वि ाष्टता का कारण था उनकी अपने दे ा और समाज के लिए प्रतिबद्धता। वे अपने समाज और दे ा को व्यक्ति से अधिक महत्त्व देते थे। इसीलिए वे अपने जीवनकाल में ही एक किंवदंती बन गए। उनके व्यक्तित्व का निर्माण जीवन की पाठ ााला में हुआ था। यद्यपि उन्होंने उच्च ि ाक्षा प्राप्त की थी किन्तु अपने समाज से प्राप्त चेतना को उन्होंने इस ि ाक्षा के साथ मिलाकर समाज को एक नई दि ाा दी।

महात्मा हंसराज ने जब डी.ए.वी. आन्दोलन को अपना जीवन समर्पित किया तो भारतीय समाज ने आ चर्य के साथ युवा हंसराज की ओर देखा। उनके सामने त्याग का ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं था। यद्यपि वे चाहते तो सुविधासम्पन्न जीवन जी सकते थे, डी.ए.वी. आन्दोलन से ही अपनी सेवाओं के बदले में उचित पारिश्रमिक या मानदेय प्राप्त कर सकते थे परन्तु उन्होंने जो रास्ता चुना उससे वे अपने समय को काफी हद तक अपनी दृष्टि से बदलने में सफल हुए।

महात्मा हंसराज की मान्यता थी कि साम्राज्यवाद से मुक्ति पाने के लिए ज्ञान अनिवार्य है। यह ज्ञान केवल परंपरागत ज्ञान तक सीमित नहीं था। इसमें दुनिया में हो रही नई–नई खोजों, हलचलों का ज्ञान भी ाामिल था। उनके अवचेतन में संभवतः यह बात गहरे तक मौजूद थी कि हमारी लम्बी गुलामी का कारण दुनिया भर में होने वाली हलचलों के प्रति हमारी

अनभिज्ञता है। इसीलिए उन्होंने अपने सहयोगियों को इस वास्तविकता का अहसास कराया कि लगातार आगे बढ़ती दुनिया का मुकाबला हम केवल अपने परंपरागत ज्ञान से नहीं कर सकते। इसके लिए तो यह जरूरी है कि दुनिया में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जो नई प्रगति हो रही है, उससे हम अपने विद्यार्थियों को परिचित कराएँ। इसीलिए उन्होंने डी.ए.वी. संस्थानों में ऐसी ि ाक्षा का प्रावधान किया जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की हिमायती थी।

महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व की एक और वि ाष्टता थी – उनका अपने सहयोगियों और विद्यार्थियों के साथ सक्रिय संवाद। इस वि ाष्टता के कारण वे जहाँ उनकी आव यकताओं से परिचित रहते थे, वहीं उनके मस्तिष्क को भी वे भली–भाँति समझ लेते थे। यही कारण है कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के किसी भी ऐसे आह्वान से अपने संस्थान को अछूता रखा जिसमें कक्षाओं के बहिष्कार की बात होती थी। उनका अपने विद्यार्थियों को यह स्पष्ट कहना था कि उनका प्राथमिक उद्दे य ि ाक्षा प्राप्त करना है। ि ाक्षा प्राप्त करने के बाद उनके विरोध में अधिक तेजस्विता का समावे ा होगा। अपने इस दृष्टिकोण के कारण उन्हें अनेक आक्षेप भी सहने पड़े, परन्तु वे जिस मिट्टी के बने थे उस पर उनका कोई असर नहीं होता था। महात्मा हंसराज को अपना साध्य स्पष्ट था, साध्य तक पहुँचने का मार्ग भी उन्हें पता था। इस मार्ग को बनाने वाले उपकरण भी उनके पास थे। इसीलिए उन्होंने ि ाक्षा जगत में एक ऐसी चेतना उत्पन्न की जिसने ि ाक्षा का उद्दे य समाज परिवर्तन से जोड़ दिया। इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि उस दौर में जितने भी मुक्ति संघर्ष हुए, उनमें डी.ए.वी. आन्दोलन में ि ाक्षित–प्र ि ाक्षित युवजन बड़ी संख्या में ामिल होते थे। इतना ही नहीं जो भी प्राकृतिक आपदा आती थी उनमें वे कार्यों का संचालन करते थे।

महात्मा हंसराज ने अपने समय में सेवा की जिस प्रवत्ति को डी.ए.वी. आन्दोलन से जोड़ा, वह आज भी इसका अभिन्न अंग है। आज भी डी.ए.वी. आन्दोलन से निकले युवजन प्रत्येक मोर्चे पर सक्रिय दिखाई देते हैं। महात्मा जी ने धारा के विरुद्ध तैरने का जो जोखिम उठाया, वही आज भी डी. ए.वी. आन्दोलन की धरोहर है। चिंतन और कर्म के अद्भुत समन्वय के कारण महात्मा हंसराज आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने समय में थे।

योग

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

योग ाब्द इन दिनों बहुत विख्यात हो गया है और केवल भारत में नहीं अपितु अमेरिका और यूरोप में तो योग के प्रति बहुत रुचि हो गई है। जिस पदार्थ की माँग अधिक हो जाए, यह एक स्वाभाविक बात है कि उसकी नकल होने लगती है। योग के नाम पर कुछ लोगों ने दुकानदारी प्रारम्भ कर दी है। कहीं योग बदनाम न हो जाए इसलिए मैंने उचित समझा है कि योग के वास्तविक रूप को आपके समक्ष रख दिया जाए। योग की कितनी ही पद्धतियाँ प्रचलित हो गई हैं। पा चात्य पद्धति और भारतीय पद्धति। पा चात्य पद्धति में Hypnotism और Mesmerism, यह दोनों पद्धतियाँ योग नहीं कहला सकतीं क्योंकि इनसे बुद्धि को भ्रमित किया जाता है और सांसारिक पदार्थों के वास्तविक रूप को छिपा कर सांकल्पिक रूप को सामने लाया जाता है जैसे– Hypnotism से किसी को सम्मोहित करके उससे मनमानी कार्रवाई कराई जाती है। यह तो योग से सर्वथा बात है। हाँ, भारतीय योग पद्धतियाँ बुद्धि को वास्तविक ाक्ति देती हैं जिससे पदार्थों का असली रूप समझा जा सकता है। योग के विभिन्न रूप हैं – भक्तियोग, ाक्तियोग, हठयोग और पतंजलि मुनि का ध्यान योग। भक्ति योग मनुष्य को भावविभोर कर देता है और अपने प्यारे प्रीतम प्रभु के वियोग में इतना व्याकुल कर देता है जैसे मीरा की अवस्था हुई थी और कबीर ने भी ठीक कहा है कि **"पहले अग्नि विरह की, पीछे प्रेम प्यास, कहे कबीर तब जानिए, प्रभु मिलन की आस।"**

भक्ति में युक्ति नहीं चलती। यह तो प्रेम, श्रद्धा का सौदा है। प्रेम लेना नही सिखाता, देना सिखाता है और प्रभु भक्त भी वही है जो अपने प्रभु से कुछ माँगे नहीं अपितु अपने आपको प्रभु के अर्पण कर दे।

हठयोग ारीर को सांसारिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए ारीर और मन को तैयार करता है और अमेरिका में बहुत लोग हठयोग के द्वारा अपने ारीर को स्वस्थ बना रहे हैं। योग के आसन मानव ारीर की रग–रग के अन्दर स्फूर्ति पैदा करते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरु अपनी बड़ी आयु में भी प्रतिदिन पन्द्रह मिनट योग के आसन करते थे। ारीर ठीक है तो भोजन का भी स्वाद आता है और

भजन का भी और सांसारिक कार्य भी ठीक होते हैं। ारीर बिगड़ जाने पर किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाता है। परन्तु योग के सारे आसन प्रत्येक व्यक्ति के लिए नहीं हैं जैसे कैमिस्ट की दुकान पर सारी दवाइयाँ एक ही रोगी के लिए नहीं है। अगर एक ही रोगी सारी दवाइयाँ खा लेगा तो मरने के सिवाय कुछ न होगा। ऐसे ही 84 प्रकार के आसन हरेक व्यक्ति के लिए नहीं हैं। गुरु देख लेता है कि कौन से आसन इसके ारीर को स्वस्थ रख सकेंगे।

पतंजलि मुनि का अष्टांग योग वास्तविक योग कहलाने का अधिकारी है क्योंकि इसके द्वारा ाारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति की जा सकती है। मानव जीवन का जो ध्येय है उसको पूर्ण करने में अष्टांग योग पूरी सहायता देता है। अथर्ववेद में यह आदे ा है जो महर्षि स्वामी दयानन्द के ाब्दों में वेदभाष्य में लिखा गया है। वे लिखते हैं, "हे उपासक लोगो! तुम मुझको प्रेम भाव से अपनी आत्मा में सदा देखते रहो।" अपनी आत्मा में परमात्मा को कैसे देखना है इसका उल्लेख भी वेद भगवान में किया गया हैं अथर्ववेद का यह मन्त्र पढ़िए-

अष्टाविं ाानि ि ावानि ाग्मानि सह योगं जन्तु मे।
योगं प्रपद्ये क्षेमत्वं क्षेमं प्रपद्ये योगत्वं नमोऽहोरात्राभ्यामस्त,
1 अथर्व.

अर्थ- "हे परमे वर-आपकी कृपा से हम लोगों को (ध्यानयोग) उपासना योग प्राप्त हो तथा उससे हमको सुख भी मिले। इसी प्रकार आपकी कृपा से दस इन्द्रिय, दस प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, विद्या, स्वभाव, ारीर और बल, इन 28 मंगलकारक तत्त्वों से बने हमारे ारीर सब कल्याणों में प्रवत्त हो कर उपासना योग (ध्यान योग) का सदा सेवन करें तथा हम भी उस योग द्वारा रक्षा को और रक्षा से योग को प्राप्त हुआ चाहते हैं इसलिए रात दिन आपको नमस्कार करते हैं।"

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने ऋग्वेद के उपासना खंड में यह लिखा है कि परमात्मा की उपासना अष्टांग योग के द्वारा होती है। सबसे पहले यम नियमों का पालन करना होता है। ये ऐसी 10 भट्टियाँ हैं जब मानव जीवन के सोने को इनमें डाला जाता है, फिर आसन को दढ़ बनाना होता है तब प्राणायाम के द्वारा वास की गति को रोक देना होता है क्योंकि जब तक वास चलता है तब

तक चित्त भी चलता है और जब तक चित्त नहीं रुकता तब तक अन्दर बैठे हुए प्रीतम के द र्ान नहीं होते। इसमें प्राणायाम एक ऐसी क्रिया है जो किसी अनुभवी से ही सीखनी चाहिए। कुछ लोग इस भ्रम में पड़े हुए हैं कि गहस्थी लोग प्राणायाम ही कर सकते परन्तु जितने बड़े-बड़े योगी हुए हैं वे सब गहस्थी थे। महादेव ि ाव के दो बेटे थे, भगवान राम, राजा जनक, भगवान कृष्ण, मदालसा माता, राजा अ वपति सब गहस्थी थे और पूर्ण योगी थे और योगी याज्ञवल्क्य गहस्थी थे क्योंकि उनकी दो पत्नियाँ थीं।

चित्त की वत्ति को केन्द्र पर केन्द्रित कर देना और फिर उस केन्द्र के अन्दर घुस कर अपने देवता के द र्ान पा लेना यही योग का उद्दे य है परन्तु यह केवल ाारीरिक क्रिया नहीं है इसके साथ मन, बुद्धि और चित्त का पूर्ण सहयोग अनिवार्य है। मन यम नियमों से बलवान हो जाता है। बुद्धि ऋतम्भरा बुद्धि बन जाती है और चित्त इतना निरुद्ध हो जाता है फिर उसमें कि कोई संकल्प-विकल्प नहीं उठता। परन्तु यह स्मरण रहे कि मन, बुद्धि और चित्त भी प्रकृति के पदार्थ हैं। यह ाुद्ध चैतन्य प्रभु के पास नहीं पहुँचा सकते। इसके आगे तीव्र वैराग्य काम आता है और यही वैराग्य भक्त और भगवान का मिलाप करवा देता है। इस पथ पर चलने के लिए अत्यन्त आव यक बातें ये हैं-

1. अपने चित्त को सदा प्रसन्न रखना चाहिए किसी भी प्रकार की चिन्ता मन में नहीं होनी चाहिए।
2. किसी से ईर्ष्या, घणा नहीं करनी चाहिए। सबको मित्र दष्टि से देखना आव यक है।
3. प्रभु प्रेम में उन्मत्त हो जाना चाहिए। हर अवस्था में प्रभु कृपा को अनुभव करना चाहिए।
4. अपने ारीर को हर प्रकार के द्वन्द्व सहन करने के योग्य बना लेना चाहिए।
5. अपना कर्त्तव्य यह है कि पूरा यत्न और पुरुषार्थ करना मानव धर्म है फल भगवान पर छोड़ देना चाहिए।
6. किसी न किसी सेवा कार्य में भाग लेना चाहिए। दुनिया के दुःख की मात्रा को कम करना चाहिए और अन्त में प्रभु में इतना मस्त हो जाना चाहिए जैसे सांसारिक प्रेमी अपने प्रीतम के लिए हो जाता है।

दलितों को न्यूनतम योग्यता के आधार पर मिले नौकरी

(अम्बेडकर जयंती 14 अप्रैल पर वि ोष)

संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने आरक्षण और जातिप्रथा पर काफी कुछ लिखा। पे । है उनके विचारों के कुछ खास अं ाः

आरक्षण

दलितों की माँग है कि दे ा में न्यूनतम योग्यता के आधार पर सरकारी सेवाओं में दलितों के लिए आरक्षण हो। गैर-दलित जातियों का कहना है कि क्षमता और कार्यकु ालता को नौकरियों का आधार होना चाहिए। मेरे हिसाब से सवाल यह नहीं है कि क्या सरकारी नौकरियों के लिए कार्यकु ाल व्यक्तियों का चुनाव प्रतियोगिता के आधार पर किया जाना ही सही है, बल्कि प्र न यह है कि क्या यही कर देने से दलित नौकरियों में आ जाएँगे? यह दे ा की ि ाक्षा प्रणाली पर निर्भर है। क्या ि ाक्षा सुविधाओं का व्यापक विस्तार है? अगर नहीं, तो सभी वर्गों को खुली प्रतियोगिता में ाामिल होने के लिए कहना अंधेर है। भारत में यह मूलस्थिति ही धोखे की जननी है। भारत में उच्च ि ाक्षा पर उच्च जातियों का एकाधिकार है। दलितों को तो ि ाक्षा दिलाने के मौके ही नहीं दिए जाते। उनकी गरीबी ऊँचे पदों के लिए उच्च ि ाक्षा दिलाने में सबसे बड़ी रुकावट है और उच्च सरकारी पद उनकी पहुँच से दूर हैं। सरकार उन्हें उच्च ि ाक्षा दिलाने की जिम्मेदारी नहीं लेगी। इस तरह नौकरियों के लिए दलितों को खुली प्रतियोगिता पर निर्भर रहने को कहना उनके साथ एक पाखंड है। दलितों द्वारा कही गई बात किसी तरह से अनुचित नहीं है। वे मानते हैं कि कार्यकु ालता बनाए रखना जरूरी है। इसी कारण अपने प्रस्ताव में उन्होंने खुद ही कहा है कि न्यूनतम योग्यता की ार्त पूरी होने पर ही उनकी माँग मानी जाए। दूसरे ाब्दों में दलितों की माँग यही है कि सभी सरकारी नौकरियों के लिए न्यूनतम योग्यता तय की जाए और अगर किसी पद के लिए दो लोग आवेदन करें और दलित उम्मीदवार न्यूनतम योग्यता रखता है तो चाहे उच्च जाति के

उम्मीदवार के पास न्यूनतम योग्यता से बढ़कर योग्यता भी क्यों न हो, दलित उम्मीदवार को प्राथमिकता दी जाए। इसका असली मतलब यह है कि नियुक्ति का आधार न्यूनतम योग्यता ही हो, उच्चतम योग्यता नहीं।

जाति प्रथा

आज दुनिया में कोई भी सभ्य दे ा ऐसा नहीं है, जो पुरानी मान्यताओं से चिपका हुआ हो। हमारे दे ा का धर्म आदिम है और इसके आदिम संकेत इस आधुनिक काल में भी पूरे जोर– ोर से इस पर हावी हैं। इस सिलसिले में मैं गौत्र से बाहर ादी का जिक्र करना चाहता हूँ। आदिम युग में गोत्र के बाहर ादी का चलन था। वक्त के बदलाव के साथ-साथ तो इस ब्द की सार्थकता ही जाती रही और खून के रि ते को छोड़कर विवाहों पर कोई पाबंदी ही नहीं रही, लेकिन भारत में आज भी गोत्र से बाहर विवाह करने की प्रथा ही चलन में है। यह कहना कोई अति ायोक्ति नहीं होगी कि भारत में अलग गौत्र में ादी करना एक विधान है और इसका उल्लंघन संभव नहीं, यहाँ तक कि जाति के भीतर विवाह प्रथा के बावजूद, गोत्र के बाहर विवाह पद्धति का कठोरता से पालन किया जाता है। गोत्र के बाहर विवाह करने की प्रथा का उल्लंघन करने पर जाति से बाहर विवाह करने वालों पर सख्त सजा का चलन है। आप देख सकते हैं कि जाति से बाहर ादी का नियम बना दिया जाए तो जातिप्रथा का आधार ही मिट जाए, क्योंकि अलग जाति का मलतब आपसी मिलन है। नतीजा यही निकलता है कि जहाँ तक भारत का संबंध है, यहाँ गोत्र से बाहर ादी करने की परंपराओं के साथ एक ही जाति में ादी करने का विधान भी जुड़ा है। बहरहाल, मूल रूप से बहिर्गोत्री समाज में एक ही जाति में ादी करने के विधान के पालन के जरिये गोत्र से बाहर ादी की परंपराओं के रहते हुए भी एक जाति में ादी होती है। इसी पर विचार करके हमें समस्या का हल मिल सकता है। एक ही जाति में ादी करने के रिवाज की अलग गोत्र में ादी पर जकड़ ही जातिप्रथा का कारण है।

प्रचारकों के प्रेरणात्मक एवं अनुकरणीय कार्य

-सी. ए. राजकुमार

आर्जसमाज की सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक विचारधारा का आज पहले से भी अधिक सार्थकता के साथ प्रचार हो सकता है यदि हमारे समस्त अधिकारी एवं विद्वान् अपनी समस्त एषणाओं को त्यागकर मि ानरी भावना से प्रचार करें। आर्यसमाज के स्वर्णयुग का कारण यह था कि उस समय हमारे पास पंडित गुरुदत्त, पंडित लेखराम, स्वामी द ानानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि महर्षि के अनेक दीवाने थे जिन्होंने अपना तन, मन और धन अपने मि ान के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा से ऊपर उठकर निष्काम-भाव से कार्य किया। एक बार हम लोग पूज्य आचार्य चैतन्यजी की कुटिया में बैठे थे तो हमारे आग्रह पर उन्होंने कुछ प्रसंग सुनाए। विभिन्न प्रान्तीय सभाओं द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस के ाताब्दी कार्यक्रम धूमधाम से मनाए जा रहे थे। ऐसा ही एक आयोजन हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से ि ामला में मनाया गया था। उस समय आचार्य चैतन्यजी सभा के उपमन्त्री थे। उन्हें ाताब्दी समारोह में आने वाले लोगों की आवास व्यवस्था का कार्यभार सौंपा गया था। इस कार्य को उन्होंने कितनी निष्ठा और लगन के साथ किया होगा इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक दिन सांयकाल लगभग साढ़े आठ बजे ब्रह्मचारी रामप्रका ाजी ने उनसे पूछा कि आपने रात्रि का भोजन कर लिया कि नहीं? उनके इस प्र न पर चैतन्यजी को स्मरण आया कि रात्रिकालीन भोजन की बात तो दूर रही उन्होंने तो प्रातःकाल से अब तक कुछ भी मुँह में नहीं डाला है। उन्होंने आर्यसमाज सुन्दरनगर तथा वर्षों आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, वरिष्ठ उपप्रधान और कार्यकारी प्रधान के रूप में निष्कामभाव से की गई सेवा के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने बहुत ही भावविभोर होकर कहा कि किस प्रकार उन्होंने तथा उनके समूचे परिवार ने सभा के लिए समर्पित-भाव से कार्य किया है तथा सभा की पत्रिका 'आर्यवन्दना' को अपने बच्चों की तरह पाला था। उन्होंने जम्मू-का मीर के बार्डर क्षेत्र तथा गुजरात, महाराष्ट्र आदि अनेक प्रान्तों में किन कठिन परिस्थितियों में वेद-प्रचार किया है, हम सुनकर आ चर्यचकित

रह गए। वह अपने आपमें अनुपम एवं अनुकरणीय हैं।
उन्होंने बताया कि सन् 1996 में आर्यसमाज भरवाई के 81वें वार्षिक उत्सव में हम 24 से 29 जुलाई तक रहे। हमारी ठहरने की व्यवस्था आर्यसमाज में ही की गई थी मगर बरसात के कारण दरियाँ पानी से भीगी हुई थीं तथा बिछाने के लिए तलाई, ओढ़ने के लिए कोई चद्दर या तकिया आदि कुछ भी नहीं था। हम जैसे-तैसे सो तो गए मगर नीचे से गीलापन इतना कि हमारे पहने हुए कपड़े भी गीले हो गए। नींद तो कहाँ आनी थी। मंच पर से एक सूखी दरी बिछाई और आसनों को तकिया बनाया मगर तभी तितलियों के आकार के कुछ बड़े-बड़े जीव आकर हमारे चेहरों पर मँडराने लगे। जैसे-तैसे रात व्यतीत हुई। प्रातःकाल ौचादि के लिए खुले में जाना था मगर साथ पानी ले जाने के लिए कोई भी पात्र आदि नहीं था। सोचा चलो अब जाना तो है ही पानी बाद में ले लेंगे। ज्यों ही सड़क के निचली ओर उतरने लगे तो रेतीली भूमि पर से दोनों के पाँव फिसले और सँभलने का कोई मौका न मिलने के कारण बहुत नीचे तक पहुँच गए। वहाँ से सड़क तक पहुँचना और भी अधिक कठिन हो गया क्योंकि रेतली भूमि पर जितना ऊपर चढ़ते थे फिसलकर उतना ही नीचे पहुँच जाते थे। जैसे-तैसे सड़क तक पहुँचे और पानी के लिए एक सुराही में रखे हुए पानी का प्रयोग किया। अगले दिन बिस्तर की व्यवस्था हो सकी। लेकिन सुबह मुझे बहुत तेज़ बुखार हो गया। उसी स्थिति में उस दिन तीन प्रवचन दिए जिससे बुखार और अधिक तेज हो गया। उधर सत्यप्रिया जी के दाँत में असहनीय दर्द हो गया मगर वे भी भजन गाती रहीं। कहीं कार्यक्रम खराब न हो जाए इस डर से हमने पी.डब्ल्यू.डी. के विश्रामगह में अपने ठहरने की व्यवस्था की तथा इसका व्यय-भार आर्यसमाज पर नहीं डाला।
उन्होंने एक और प्रसंग इस प्रकार सुनाया कि पंचकूला की आर्यसमाज सैक्टर 9 में सन् 1997 में 10 से 16 नवम्बर तक हमारा कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में आचार्य रामप्रसादजी वेदालंकार तथा आचार्य वि वदेव जी आदि अनेक अन्य विद्वान् भी पधारे थे। आचार्य रामप्रसादजी हमसे बहुत अधिक प्रेम करते थे। हमने देखा कि न तो लोग ही उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं और न वे स्वयं ही। एक दिन ठण्डी पूरियाँ

खाने लगे तो सत्यप्रियाजी ने उन्हें रोक दिया तथा उन दिनों आयोजकों के साथ मिलकर स्वयं सत्यप्रियाजी ने उनके खानपान तथा स्वास्थ्य का ध्यान रखा। आचार्य रामप्रसाद जी एक दिन मेरे प्रवचन के बाद बोलने के लिए आए तो बहुत देर तक हमारी प्र ांसा करते रहे। एक दिन हम सभी विद्वान् उनके कमरे में बैठे बातचीत कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि सभी अपनी-अपनी प्रचार यात्राओं में आए कष्टों के अनुभव बताएँ। देखते हैं कौन कष्ट सहने में प्रथम आता है। आचार्य वि वदेवजी ने बताया कि एक बार वे किसी कार्यक्रम पर जा रहे थे तो मार्ग में बहुत बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। उनके सिर पर ओलों की चोट पड़ने लगी, उन्होंने अटैची अपने सिर पर रखी और ओलों से अपना बचाव करते हुए कार्यक्रम पर पहुँचे। आचार्य रामप्रसादजी ने हँसते-हँसते सुनाया कि एक बार उन्हें ऐसे बिस्तर पर सुला दिया गया जिसकी रजाई में छोटे-छोटे चूहों के बच्चे थे। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद चूहे उछल-उछल कर बाहर निकलते रहते थे। उन्होंने एक अन्य घटना सुनाते हुए कहा कि एक कार्यक्रम पर जाते हुए उन्हें अचानक एक स्थान पर रात पड़ गई और उन्हें रात किसी पुराने खण्डहरनुमा स्कूल में बितानी पड़ी। मैंने कहा कि हमारे साथ तो इससे भी बहुत बड़ी-बड़ी बीसियों घटनाएँ घटी हैं। उनमें से हमने केवल दो ही घटनाएँ सुनाईं तो आचार्य रामप्रसादजी ने एकदम गंभीर होकर कहा कि चैतन्यजी आपने जब इतने कष्ट उठाए, तो आप प्रथम रहे।

2008 में आर्यसमाज 32-डी, चण्डीगढ़ का 25 मई से 1 जून तक कार्यक्रम था मगर मुझे कुछ दिनों से ज्वर था और 21 मई को ज्वर ने भयंकर रूप धारण कर लिया। अपने पारिवारिक डॉक्टर रमे ाजी को दिखाया तो उन्होंने खूनादि टैस्ट कराने के बाद कहा कि आपको टाइफाइड है अतः आप कार्यक्रम पर बिल्कुल न जाएँ। आपका जीवन बहुत कीमती है। उधर श्री प्रेमजी को चण्डीगढ़ फोन करके स्थिति बताई तो उन्होंने कहा कि हमारा कार्यक्रम खराब हो जाएगा। मुझे स्वामी श्रद्धानंद, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त, स्वामी द ानानन्द आदि का स्मरण हो आया जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं को आहुत कर दिया। बहुत विचार करने के बाद अन्ततः कार्यक्रम में जाने का

निर्णय लिया। स्वयं कार चलाकर हम चण्डीगढ़ के लिए 24 मई को रवाना हो गए। मार्ग में बनेर की चढ़ाई पर एकान्त जंगल में कार का टायर पंचर हो गया। हमें स्वयं टायर बदलना आता नहीं था, यतिजी को वहीं जंगल में अकेला छोड़कर कुछ दूर पैदल चलकर और फिर एक ट्रक पर बैठकर आगे जाकर बहुत अनुनय-विनय करके तथा अधिक पैसे देकर एक मैकेनिक को लाए मगर उसने पूरा काम भी नहीं किया। जैसे-तैसे आगे बढ़े ही थे कि रास्ते में ट्रेफिक-पुलिस का सामना हो गया। जल्दी-जल्दी में तथा परे ाानी के कारण हम बैल्ट लगाना भूल गए थे अतः हमारा चालान कर दिया गया। इसका सबसे बड़ा कुपरिणाम यह हुआ कि हमें चण्डीगढ़ पहुँचने में बहुत देर हो गई। चण्डीगढ़ पहुँचते-पहुँचते हमें बहुत रात हो गई। सो जैसे-तैसे आर्यसमाज पहुँच गए। हमारे पहुँचने पर सभी अधिकारी बहुत प्रसन्न हुए। यज्ञ का ब्रह्मा भी मैं ही था। मई 25 को प्रातः यज्ञ तथा प्रवचनादि ठीक प्रकार से निभ गया मगर प्रवचन समाप्त होते ही मेरा ारीर इतनी बुरी तरह से काँपने लगा कि मंच पर बैठना असम्भव हो गया। मैं उठकर सीढ़ियों की रैलिंग का सहारा लेते-लेते कमरे तक पहुँच पाया। कमरे में पहुँचने पर ारीर और भी अधिक जोर-जोर से काँपने लगा। इतने में सत्यप्रियायति जी, सेवक क मीरजी तथा कुछ अन्य अधिकारी भी कमरे में आ गए। मेरा ारीर बहुत ही बुरी तरह से काँप रहा था। मैं डॉक्टर रमे ा को फोन करने लगा तो मेरे बहुत बुरी तरह से काँपते हुए हाथ से मोबाइल नीचे गिर गया। स्थिति बड़ी विकट थी। सत्यप्रियाजी ने डॉक्टर रमे ाजी से बात की तो उन्होंने फोन पर ही कुछ दि ानिर्दे ा दिए और तद्नुसार उपचार करके अस्थायी रूप से मैं कुछ स्वस्थ हो गया मगर जब रात्रि के प्रवचन के बाद फिर स्थिति वैसी ही हो गई तो सभी को बहुत चिन्ता हो गई। मुझे चिन्ता यही थी कि कार्यक्रम को सफल कैसे बनाया जाए। अगले दिन एक महिला डॉक्टर के पास गए उसने भी लगभग वही दवाइयाँ बताईं जो डॉक्टर रमे ा ने बताई थीं। उन्होंने यही कहा कि आपको ऐसी स्थिति में कार्यक्रम पर नहीं आना चाहिए था। आपके ारीर की स्थिति बिल्कुल भी ठीक नहीं है। ई वर की कृपा से जैसे-तैसे दवाइयों के सेवनादि के द्वारा कार्यक्रम ठीक

प्रकार से सम्पन्न हो गया तो मैंने परमात्मा का बहुत धन्यवाद किया तथा सभी अधिकारी भी प्रसन्न हुए।

उसके बाद 4 से 15 जून तक मोगा में हमारे संचालन में कन्याओं का वैदिक चेतना ि ाविर था। सुन्दरनगर आकर डॉक्टर रमे ाजी के पास चैक कराने गया तो उन्होंने कहा कि मैं आपको ऐसी स्थिति में सुन्दरनगर से बाहर जाने की बिल्कुल भी अनुमति नहीं दे सकता। आपको पूर्ण विश्राम करना चाहिए। बात यहाँ भी कार्यक्रम निभाने की थी। सोचा यदि मैं न गया तो ि ाविर का क्या होगा? बहिन इन्दुजी भी दूरभाष पर बार-बार यही आग्रह कर रही थी। डॉक्टर रमे ाजी को यह आ वासन देकर कि मैं स्वयं कार नहीं चलाऊँगा। दवाइयाँ लेकर हम लोग लगभग बारह बजे मोगा के लिए निकल पड़े। कार चलाने के लिए अनुरागजी को साथ ले लिया। मैं कार की पिछली सीट पर लेट गया और मार्ग में दवाइयों का सेवन करते-करते हम मोगा पहुँचे तो बहिन इन्दु एवं श्री केवलकृष्ण जी बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि यदि आप न आते तो हमारे लिए बहुत कठिनाई हो जानी थी। हालांकि वहाँ तीन स्तरों में प्रवचनादि करने होते थे मगर ठीक खान-पान तथा नियमित दवाइयों का सेवन करते हुए कार्यक्रम ठीक प्रकार से चला।

एक बार हम वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ गए हुए थे तो वहाँ नज़फगढ़, दिल्ली के कुछ लोग भी उन दिनों आए हुए थे। महात्माजी ने उनसे चर्चा की कि '2006 में हम आर्यसमाज मेन बाजार नज़फगढ़ में अक्तूबर 13 से 15 तक कार्यक्रम में गए थे। मैंने कुछ दिन पूर्व ही दाँत उखड़वाया था मगर उस ओर के पूरे ही मसूड़े में बहुत ही भयंकर छाले पड़ गए थे जिनमें असहनीय दर्द था। प्रवचन देने की बात तो दूर मुझसे पतली खिचड़ी भी नहीं निगली जाती थी। फिर भी मैंने प्रवचन दिए क्योंकि प्रवचन से पूर्व एक डाक्टरजी मेरे उस भाग को इंजैक ान व स्प्रे द्वारा सुन्न कर देते थे। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

'आर्यकुंज, कालांवाली,
जि.-सिरसा, हरियाणा-125201

भारत माता के वीर आद र्ा सपूत ाहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल'

–मनमोहन कुमार आर्य

आज की युवापीढ़ी आधुनिक युग के निर्माता दे ाभक्तों को भूल चुकी है जिनके त्याग व बलिदान के कारण आज हम स्वतन्त्र वातावरण में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी प्रायः धर्म, जाति व दे ा के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं है वा विमुख है। आ चर्य है कि हमें दे ा–विदे ा के क्रिकेट खिलाड़ियों, फिल्मी अभिनेताओं, बड़े–बड़े घोटाले व भ्रष्टाचार करने वाले राजनीतिज्ञों के नाम व कार्यों के बारे में तो ज्ञान है परन्तु जिन्होंने दे ावासियों के लिए बलिदान किया उन्हें हम भूल चुके हैं। इसे दे ावासियों की उन हुतात्मा बलिदानियों के प्रति कृतघ्नता ही कह सकते हैं। ऐसा क्यों हुआ? इसका सरल उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद दे ा में जो वातावरण बना उसके कारण ही ऐसा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी ने स्वदे ाी सभी अच्छी चीजों को छोड़ दिया है और पा चात्य बुरी चीजों को अपनाया है। ऐसे वातावरण में ाहीदों के जन्म व बलिदान दिवस हमें अवसर देते हैं कि हम तत्कालीन परिस्थितियों में उनके द्वारा किए गये कार्यो पर दष्टिपात कर उनका मूल्यांकन करें व उनसे ािक्षा ग्रहण करें। भारत माता को विदे ाी आक्रान्ताओं से, जो दे ावासियों को पल–प्रतिपल अपमानित करते थे, हमारा प्राचीन धर्म व संस्कृति जिनके ाासन में असुरक्षित थे। जो दे ा की सम्पदा को लूटते थे व बौद्धिक ाोषण करते थे, जिन्होंने हमारी अस्मिता को अपमान व अज्ञान के अन्धकार से ढकेल दिया था, उनसे मुक्त कराने के लिए अपने तन, मन, व धन को मातभूमि की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अर्पित करने वाले भारत माता के इस महान वीर सपूत का नाम है पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल'। ाहीद बिस्मिल ने 29 वर्ष की भरी जवानी में 19 दिसम्बर, 1927 को फाँसी के फन्दे को चूम लिया। उनके

जीवन पर दष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि उनके जीवन का उद्दे य विदे ी ासक अंग्रेजों की पराधीनता से दे ा को मुक्त कर प्राचीन धर्म व संस्कृति की रक्षा, सम्मानजनक जीवन के साथ दे ा की एकता व अखण्डता की रक्षा करते हुए सबकी ारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना एवं वैदिक आद ों, सत्य व न्याय पर आधारित ासन स्थापित करना था।

रामप्रसाद बिस्मिल के पिता श्री मुरलीधर, चाचा श्री कल्याणमल तथा पितामह श्री नारायणलाल थे। आप चार भाई व पाँच बहनें, जिनमें आप सबसे बड़े थे। पिता ग्वालियर से आकर ाहजहाँपुर, संयुक्त प्रान्त में बस गए थे। मुरलीधरजी ने पहले नगरपालिका में 15 रुपये मासिक पर नौकरी की और बाद में कोर्ट में स्टाम्प पेपर बेचने का काम किया। रामप्रसाद जी का जन्म 11 जून सन् 1897 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक ि ाक्षा हिन्दी व उर्दू में हुई। अपनी धर्म परायण माताजी की प्रेरणा से आपने अंग्रेजी भी सीखी। बचपन में आपको अनेक बुरे व्यसन लग गये बाद में घर के पास ही आर्य समाज मन्दिर था वहाँ जाने लगे। मन्दिर के पण्डितजी ने आपको ब्रह्मचर्य व व्यायाम के बारे में बताया और उसका पालन करने को कहा जिससे आपको सही दि ाा मिली। आर्य समाज मंदिर में आपको श्री इन्द्रजीत जी का सत्संग प्राप्त हुआ। उन्होंने आपको ई वर का ध्यान करना व सन्ध्या करना सिखाया। उनकी प्रेरणा से आपने सत्यार्थ प्रका ा पढ़ा। सत्यार्थ प्रका ा के अध्ययन से आपके सारे व्यसन छूट गये और आपमें दे ाप्रेम व दे ा को स्वतन्त्र कराने की भावना उत्पन्न हुई। आपका स्वास्थ्य जो पहले खराब रहता था अब संध्या, व्यायाम व योगाभ्यास से सुधर गया। हमें आर्य समाजी मित्र, आर्य विद्वान् प्रो. अनूप सिंह से ज्ञात हुआ कि आप अपने भव्य, प्रभाव ाली व आकर्षक ारीर के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गए।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी को आर्य समाज के सम्पर्क में आने से पूर्व अनेक दुव्यसन लग गये थे। दुर्व्यसनों के लिए पैसे

चाहिये। इसके लिए वह पिता के पैसे भी चोरी कर लेते थे। दुर्व्यसन छुपकर किए जाते हैं, इसलिए अन्यों पर प्रायः यह प्रकट नहीं होते थे। रामप्रसाद जी धूमपान, भाँग का सेवन, चरित्र बिगाड़ने वाले उपन्यासों का पढ़ना, निरर्थक घूमना-फिरना व उसमें समय नष्ट करना जैसे लक्ष्य से भटके मनुष्य की भाँति कार्य करते थे। रामप्रसाद जी का भाग्योदय हुआ। संयोग से आप आर्य समाज के सम्पर्क में आये। यहाँ आर्यों की संगति व उनसे मिलने वाले तर्कपूर्ण सुझावों ने आपको प्रभावित करना आरम्भ किया। व्यसनों से जीवन को होने वाली हानि का स्वरूप आप पर प्रकट होने से उनके प्रति अरुचि हो गई। रामप्रसाद जी में जो दूषण थे वे अज्ञानता, मन के नियन्त्रित न होने व इन्द्रियों का दास बनने के कारण उत्पन्न हुए थे, उनका दूर होना सरल था। उन्हें इनके दुष्प्रभावों का ज्ञान हुआ तो उन्होंने त्याग दिया और आत्मा की ाुद्धि प्राप्त करके एक युवा महात्मा बन गये।

आर्य समाज में सन्ध्या, हवन, वहाँ के सच्चरित्र सदस्यों एवं विद्वानों के उपदे ाों, उनकी संगति उनसे वार्तालाप व उनकी सेवा का आप पर ऐसा प्रभाव हुआ कि आर्य समाज में ही आप अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। पिता आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित थे। उन्हें अपने पुत्र रामप्रसाद का वहाँ अधिक समय व्यतीत करना अच्छा नहीं लगता था। इससे वह उनसे क्रुद्ध हो गये। उन्होंने रामप्रसादजी को वहाँ जाने से मना किया और अप ाब्द कहकर धमकी भी दी कि सोते समय उनका गला काट देंगे। इस कारण घर से भी उन्हें निकाल दिया। इस कठिन परीक्षा में जिसे छोटी अग्नि परीक्षा भी कह सकते हैं, हमारे पं. रामप्रसाद बिस्मिल पूरी तरह सफल हुए। यदि वह पिता के अनुचित सुझाव को मान लेते तो उनका जीवन निरर्थक हो जाता और इतिहास में जो युगान्तरकारी घटना घटी वह न हुई होती। यहाँ हम स्वामी श्रद्धानन्द के उदाहरण को भी स्मरण कर सकते हैं जब इस नास्तिक युवा मुं ाीराम, (बाद में श्रद्धानन्द) के पौराणिक व अन्धवि वासों को मानने वाले पिता नानक चन्द उन्हें बरेली में

महर्षि दयानन्द के सत्संग में लेकर गए, इस आ ाा के साथ कि स्वामी दयानन्द के सत्संग व उपदे ा के प्रभाव से उनकी नास्तिकता समाप्त हो जायेगी। महर्षि दयानन्द के सत्संग से उनकी नास्तिकता समाप्त हुई, सारे दुर्व्यसन भी समाप्त हुए और एक दुर्व्यसनी युवक आगे चलकर अपने युग का युगपुरुष बन गया। जिसका स्मारक गुरुकुल कांगड़ी आज भी अतीत के स्वर्णिम कार्यों को संजोए हुए उनकी साक्षी दे रहा है। लेखक स्वयं भी अपने एक आर्य मित्र श्री धर्मपालसिंह की संगति से सन् 1970 में अपनी 18-21 वय में आर्य समाज के सम्पर्क में आया था। उस समय ज्ञान न होने के कारण अभक्ष्य पदार्थों का सेवन व अन्य कुछ दुर्बलतायें थी जो आर्य समाज के साहित्य के स्वाध्याय, विद्वानों के प्रवचनों व अपने मित्र के नाना विषयों पर वार्तालाप से दूर हुईं थीं।

उन्हें मुं ाी इन्द्रजीत से सत्यार्थप्रका ा पढ़ने को भी मिला था। सत्यार्थप्रका ा से आपको ई वर, जीवात्मा, प्रकृति, धर्म, कर्म, यज्ञ, सन्ध्या, जीवन-मत्यु के रहस्य, पुनर्जन्म, सुख, दुख, बन्धन, मोक्ष, दे ाभक्ति, मातभूमि से प्रेम, उसकी सेवा, माता-पिता-गुरुजनों की सेवा, मत-मतान्तरों का वास्तविक ज्ञान व उन सबमें सत्य व असत्य मान्यताओं का मिश्रण, धर्म केवल एक है जिसमें सर्वां ा सत्य होता है, असत्य बिल्कुल नहीं आदि का ज्ञान हुआ एवं मूर्तिपूजादि पोषित पौराणिक वा कथित सनातन धर्म सहित बौद्ध, जैन, नास्तिक मत, ईसाई व इस्लाम मत की अवैदिक व अज्ञानपूर्ण बातों का ज्ञान भी हो गया। यह सब एक महात्मा के लक्षण हैं। रामप्रसाद बिस्मिल भी इससे युक्त हुए व इन्हें अपने जीवन में धारण किया।

आर्य समाज, ाहजहाँपुर में एक बार आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव जी का आगमन हुआ। स्वामीजी धार्मिक विद्वान होने के साथ-साथ दे ा की परतन्त्रता व उसके परिणामों से व्यथित थे। आपको इनका सत्संग प्राप्त हुआ। सत्यार्थप्रका ा, आर्याभिविनय, का वपन तो आपके हृदय में हो ही चुका था। उनको खाद व पानी स्वामी सोमदेव जी के सत्संग, वार्तालाप व सेवा से

प्राप्त हुआ। उनके पराम र्श से आपने दे श की आजादी के लिए कार्य करने को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। आर्य मनीषी डॉ. भवानीलाल भारतीय ने लिखा है कि स्वामी सोमदेव जी की ि क्षाओं से प्रभावित होकर रामप्रसाद बिस्मिल ने प्रतिज्ञा के बाद आपने युवकों का एक संगठन बनाया। इस संगठन की योजनाओं को पूरा करने के लिए स्त्रों की आव यकता थी और उन्हें खरीदने के लिए धन चाहिए था। आपने धन की प्राप्ति के लिए एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था – 'अमेरिका को स्वतन्त्रता कैसे मिली?' इसकी बिक्री से प्राप्त धन अपर्याप्त था। दूसरा उपाय यह किया कि पास के एक गाँव पर स स्त्र हमला कर धन लूटा। यह ध्यान रखा गया कि किसी को भी ारीरिक क्षति नहीं पहुँचानी है। पराधीन भारत माता को आजाद कराने के लिए उसी की सन्तानों से धन प्राप्त करने का उस समय उन्हें यही तरीका दिखाई दिया। इस घटना से आप पुलिस की जानकारी में तो आ गये परन्तु गिरफ्तारी से बचते रहे। सन् 1920 में राजनैतिक कैदियों व अन्य अपराधियों को आम माफी दिये जाने के बाद आपके नाम जारी वारण्ट भी रद्द हो गया। तब आप अज्ञात स्थान से ाहजहाँपुर आ गये। यहाँ आपने युवकों का स स्त्र दल बनाया तो सुप्रसिद्ध दे भक्त, हीद व आपके अभिन्न मित्र अ फाक़उल्ला खाँ भी आपके संपर्क में आये। दोनों में पक्की दोस्ती हो गई। अ फाक़ को अपने मित्र बिस्मिलजी को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। वे भी आर्य समाज मन्दिर में आने लगे। हम अनुमानतः कह सकते हैं कि उन्होंने आर्य समाज के सत्य स्वरूप को काफी हद तक समझा था। एक बार कुछ मुसलमानों ने आर्य समाज पर आक्रमण कर दिया। अ फाक़ उल्ला उस समय आर्य समाज मन्दिर में पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ ही थे। अ फाक़ ने रामप्रसाद जी के साथ मिलकर आक्रमणकारियों को ललकारा था और उनके मंसूबे विफल कर दिये थे। इस मित्रता को सच्ची मित्रता और हिन्दू–मुस्लिम संबंधों की एक अच्छी मिसाल कह सकते हैं।

अब प ि चम की समझ में आने लगा है कि भारत में गाय को क्यों माता माना जाता है?

-विनीत नारायण

गाय के दूध, घी, दही से लेकर गोमूत्र व गोबर तक हर चीज का अपना वैज्ञानिक महत्त्व है

जबसे मुसलमान ाासक भारत में आए तब से गौ-वं ा की हत्या होनी ाुरू हुई। हिन्दू लाख समझाते रहे कि गौ माता के समान है। उसके ारीर के हर अं ा में लोक कल्याण छिपा है, उसका मूत्र और गोबर तक औषधियुक्त हैं। इसलिए उसकी हत्या नहीं पूजन किया जाना चाहिए। पर यवनों पर कोई असर नहीं पड़ा। अक्सर यह दोनों धर्मों के बीच विवाद का विषय रहता है। अंग्रेज जब भारत में आए तो उन्होंने हिन्दुओं का मजाक उड़ाया। वे अपने सीमित ज्ञान के कारण यह समझने में असमर्थ थे कि हिन्दू गौ-वं ा का इतना सम्मान क्यों करते हैं? आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता की राजनीति करने वालों ने भी हिन्दुओं की इस मान्यता पर ध्यान नहीं दिया।

कुछ-वर्ष पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जो ाी ने यह सूचना देकर कि गौमूत्र का औषधि के रूप में अमरीका में पेटैंट करवा लिया गया है, सारे दे ा में सनसनी पैदा कर दी। यह तो मात्र आगाज़ है। योग और आयुर्वेद की तरह अब पूरी दुनिया जल्दी ही गौमाता के महत्त्व को स्वीकारने लगेगी। हम अपनी ही धरोहर को विदे ाी पैकेज में कई गुणा ज्यादा दामों में खरीदने पर मजबूर होंगे। जिस तरह पैप्सी कम्पनी हमारे बाजारों से दो रुपये किलो आलू खरीद कर 250 रुपए किलो के चिप्स बेचती है वैसे ही आने वाले दिनों में गौमूत्र व गोबर सुन्दर पैकिंग और आकर्षक विज्ञापनों के सहारे सैकड़ों रुपए कीमत पर बिकेगा। आव यकता इस बात की है कि हम गौमाता के महत्त्व को समय रहते पहचानें। ाास्त्रीय और वैज्ञानिक आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि गौमाता के ारीर के हर हिस्से से हम पर कृपा बरसती है।

गौ दूध व घत का वैज्ञानिक महत्त्व

इंटरने ानल कार्डियोलोजी कान्फ्रैंस के अध्यक्ष डॉ. ाान्तिलाल

ाह के मत से हृदय रोगियों के लिए गाय का दूध वि ोष रूप से उपयोगी है। गाय का दूध सुपाच्य होता है- अतः वह मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियाँ में पहुँचकर मस्तिष्क को ाक्ति प्रदान करता है। गाय के दूध में केरोटीन (विटामिन ए) नाम का पीला पदार्थ रहता है जो आँखों की ज्योति बढ़ाता है। चरक सूत्रस्थान 1/18 के अनुसार गाय का दूध जीवन ाक्ति प्रदान करने वाले द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। गाय के दूध में 8 प्रति ात प्रोटीन, 8 प्रति ात कार्बोडाइड्रेट और 0.7 प्रति ात मिनरल्ज (100 आई. यू.) विटामिन ए और विटामिन बी, सी, डी एवं ई होता है। निघण्टु के अनुसार गाय का दूध रसायन, पथ्य, बलवर्धक, हृदय के लिए हितकारी बुद्धिवर्धक, आयुप्रद, पुंसत्वकारक तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) ना ाक है।

गाय का घी खाने से कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता। इसके सेवन से हृदय पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। रूसी वैज्ञानिक ि ारोविच के ोधानुसार गाय के घी में मनुष्य ारीर में पहुँचे रेडियोधर्मी-कणों का प्रभाव नष्ट करने की असीम ाक्ति है। गौघत से यज्ञ करने से आक्सीजन बनती है। गौघत को चावल के साथ मिला कर जलाने से (यज्ञ) ईथीलीन आक्साइड, प्रोपीलीन आक्साइड और फोरमैलाडीहाइट जीवाणुरोधक है जिसका उपयोग आप्रे ान थिएटर को कीटाणु रहित करने में आज भी होता है। प्रोपीलीन आक्साइड वर्षा से वातावरण की ुद्धि और वर्षा कारक दोनों स्वाभाविक परिणाम है। भाव प्रका ा निघण्टु के अनुसार गौघत नेत्रों के लिए हितकारी, मधुर, ीतल, और सब घतों में उत्तम होता है। गौ-नवनीत (मक्खन) हितकारी, कान्तिवर्द्धक, महाबलकारी, वात, पित्त ना ाक, रक्त ोधक, क्षय, बवासीर, लकवा एवं वास रोगों को दूर करने वाला होता है।

गोमूत्र का वैज्ञानिक महत्त्व

गौमूत्र में ताम्र होता है। स्वर्ण सर्वरोगना ाक ाक्ति रखता है। गौमूत्र में ताम्र के अतिरिक्त लोहा, कैल्ि ायम, फासफोरस और अन्य प्रकार के मिनरल्स, कार्बोनिक एसिड, पोटा ा और लेक्टोज नाम के तत्व मिलते हैं। गौमूत्र में 24 प्रकार के लवण होते हैं, जिनके कारण गौमूत्र से निर्मित विविध प्रकार की औषधियाँ कई रोगों के निवारण में उपयोगी हैं। नवयुवकों

के लिए गौमूत्र ीघ्रपतन, धातु के पतलापन, कमजोरी, सुस्ती, आलस्य, सिरदर्द, क्षीण स्मरण क्ति में बहुत उपयोगी है। पंचगव्य घत, गोदधि, गोदुग्ध, गौमूत्र आदि से मिलकर बनता है। उसका सेवन मिर्गी, दिमागी कमजोरी, पागलपन, भयंकर पीलिया, बवासीर आदि में बहुत उपयोगी है। कैंसर जैसे दुस्साध्य और उच्च रक्तचाप, दमा जैसे रोगों में भी गौमूत्र सेवन अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

गोबर का महत्त्व

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी. ई. ब्रीगेड ने गोबर के अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है कि गाय के ताजे गोबर से टी.बी. तथा मलेरिया के कीटाणु मर जाते हैं। आणविक विकिरण से मुक्ति पाने के लिए जापान के लोगों ने गोबर को अपनाया है। गोबर हमारी त्वचा के दाद, खाज, एक्जिमा और घाव आदि के लिए लाभदायक होता है। सिर्फ एक गाय के गोबर से प्रतिवर्ष 4500 लीटर बायोगैस मिलती है। बायोगैस के उपयोग करने से 6.80 करोड़ टन लकड़ी बच सकती है, जो आज जलाई जाती है, जिससे 14 करोड़ वक्ष कटने से बचेंगे और दे ा के पर्यावरण का संरक्षण होगा। गोबर की खाद सर्वोत्तम खाद है जबकि फर्टिलाइजर भूमि क्षमता को लगातार कम करता जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में गौमाता का योगदान

राष्ट्रीय आय में 15,000 करोड़ रुपए की रा ि प्रतिवर्ष गौ-वं ा से प्राप्त होती है। 30 हजार मैगावाट अ व क्ति गौ-वं ा से प्राप्त होती है। गाय-भैंस से 5 करोड़ टन से अधिक मूल्य का दूध आज हमें प्राप्त होता है। प ाुओं से 55 करोड़ रुपए के 22 लाख टन गोबर से एक वर्ष में 36 बोरी यूरिया, 18 बोरी सुपर फास्फेट तथा 54 बोरी पोटा ा प्राप्त होता है। सूखी गायों एवं बूढ़े बैलों के गोबर से गैस प्लांट लगाकर ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों को 18,500 रुपये वार्षिक की आय हो सकती है। 1992 में लगभग 600 करोड़ रुपए मूल्य की 7.76 मिलियन टन खली निर्यात की गई जबकि दुधारू प ाुओं को यही खली खिलाने पर 38 हजार करोड़ रुपए के मूल्य का (खली से प्राप्त मूल्य का 42 गुना अधिक) 38.8 मिलियन

टन दूध प्राप्त हो सकता। गौ-वं ा से लाखों गैलन गौमूत्र प्रतिवर्ष प्राप्त होता है जो फसलों के लिए सर्वश्रेष्ठ कीटना ाक और अनेक रोगों में औषधि है। भारत में कृषि कार्य हेतु प ु ाक्ति का 20 प्रति ात एवं जीवा म ाक्ति का 14 प्रति ात सहभाग है। कृषि क्षेत्र में गाय व गौ-वं ा भारतीय कृषि की रीढ़ है। वैजिटेरियन सोसायटी ऑफ इण्डिया के अनुसार दे ा को मांस के निर्यात से प्राप्त होने वाले प्रति 1 करोड़ रुपए के लिए 15 करोड़ रुपए की हानि उठानी पड़ती है।

ऐसी तमाम जानकारियों का संचय कर उसके व्यापक प्रचार-प्रसार में जुटे युवा वैज्ञानिक श्री सत्यनारायण दास बताते हैं कि विदे ाी इतिहासकारों और मार्क्सवादी चिन्तकों ने वैदिक ाास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत का सतही अर्थ निकाल कर बहुत भ्रान्ति फैलाई है। इन इतिहासकारों ने यह बताने की कोि ा की कि वैदिककाल में आर्य गौमांस का भक्षण करते थे। यह वाहियात बात है। गोधन जैसे ाब्द के अर्थ का अनर्थ कर दिया गया। श्री दास के अनुसार वैदिक संस्कृत में एक ही ाब्द के कई अर्थ होते हैं जिन्हें उनके सांस्कृतिक परिवे ा में समझना होता है। इन विदे ाी इतिहासकारों ने वैदिक संस्कृत की समझ न होने के कारण ऐसी भूल की। आई.आई.टी. से बी.टेक. करने वाले श्री दास गौसेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। इधर गुजरात में धर्मबन्धु स्वामी 80 हजार गायों की व्यवस्था में जुटे रहते हैं। ऐसे तमाम संत, समाजसेवी और भारत के करोड़ों आम लोग गौमाता के तन, मन, और धन से सेवा करते हैं। अब समय आ गया है कि जब भारत सरकार और राज्य सरकारें गौ-वं ा की हत्या पर कड़ा प्रतिबंध लगाएँ और इनके सम्वर्धन के लिए ठोस प्रयास करें। ाहरी जनता को भी अपनी बुद्धि ाुद्ध करनी चाहिए। भैंस का दूध भारी ही नहीं दिमाग के लिए हानिकारक भी होता है। केवल दक्षिण एि ाया के दे ाों में ही भैंस का दूध पिया जाता है। ोष दुनिया में आज भी केवल गाय का दूध पिया जाता है। गौ-वं ा की सेवा हमारी परम्परा है आज के प्रदूषित वातावरण में स्वस्थ्य रहने के लिए यह हमारी आव यकता भी है। हम जितना गौमाता के निकट रहेंगे स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे।

Vegetarianism and the Vedas : Travesty of Facts

-Sh. Satyanand Shastri

For years, there has been a continuing debate amongst western scholars whether the ancient followers of Vedism were vegetarian or not. A close look at the vedic philosophy provides that the answer is an emphatic 'NO'.

Vedic thought is totally against non-vegetarianism 'Yajurveda' XL-6 says:

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुप यति।
सर्वभूतेषुचात्मानं ततो न विचिकित्सति।।

"He who sees all beings in the self and the self in all beings, feels no hatred against any creature in the world, for, he realises the similarity of all souls."

How could people who believed in the doctrines of indestructibility, transmigration and oneness (similarity) of souls as the followers of vedism dare to kill animals in 'Yajna'? They might be seeing the souls of their own near and dear ones of bygone days, residing in these living beings. They cannot be expected to indulge in such heinous action for the momentary satisfaction of their taste and hunger.

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

"May all living beings look upon me as their friend, and may I too treat them as my own friends. Oh God, do arrange things is such a way that all (living beings) behave with one another as true friends".

Can you expect people, who not only believed in as enunciated above but also lived the Vedic ideal of friendliness for all living beings, can act in a manner so as to kill their fellow beings whom they looked upon as their own friends merely for

the flimsy and transitory gratification of their hunger?

The doctrine of universal friendliness (love) enunciated above has culminated in absolute non-killing of any other form of living life in those days.

i. "Yajurveda' XVI-3 enjoins strict 'ahimsa' of mankind. It says:

मा हिंसीः पूरुषम् प ुम्

ii. Likewise Yajurveda XIII-47 says:

इमं मा हिंसीः द्विपादं प ुम्।

'Do not destroy the biped living beings'.

iii. Again 'Yajurveda' XII-32 bans animal killing when it says;

मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः।

"Do not not destroy the bodies of your people."

iv. In Yajurveda 1-1 the cow is called Aghnyaa (अघ्न्या) [animal which must not be killed)

"Yajurveda' XIII-49 forbids killings of cows for they provide milk to human beings. It says:

घतं दुहानाम् अदितिम्।
जनायाग्ने मा हिंसीः।।

"Do not not destroy the cow, giver of milk for mankind and innocent in nature". According to Apte's dictionary 'aditi' means a cow.

v. Yajurveda XIII-48 says:

इमां मा हिंसीरेक ाफम् प ुं वाजिनम्।।

"Do not destroy the one hoofed animal, the horse".

vi. In Rigveda VIII-56-17 cow slaughter has been declared a heinous crime equal to human murder It says:

आरे गोहा नहा वध अस्तु।

"One who kills a cow or murdres a man should be awarded captial punishment."

vii. Also Rg-veda X-87-16 calls those persons Yaatudhaana (demonic persons) who eat raw meat and men or of animals and prays for their beheading. It says:

यः पौरुषेयेण क्रविषा सम्भुंक्ते।
यो अ व्येन प ुना यातुधानः
अग्ने तेषां ीर्षाणि हरसाऽपि व च।।

"Those demonic people who relish (eat) raw meat of man or of animals like horses, oh God, kill them by beheading".

viii. In 'Atharva veda' VI-70-1, meat eating has been put at par with vices like drinking and gambling., It is said there:

यथा मांसं यथा सुरा यथा अक्षा अधिदेवने
यथा पुंसो देवषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः।।

"Surely, human mind gets polluted when it is lust-ridden and when it is set on meat eating, drinking and playing dice".

Thus, there are such clear tenets directly decrying the consumption of meat for human beings and declaring it as a vice equal in intensity to that of other vices like gambling etc. Is it not a travesty of facts to say that ancient followers of vedism were non-vegetarians as has been espoused by many western thinkers?

But there is nothing to be surprised about western thoughts. Most western philosophers who have studied ancient Hindu philosopy have explained it with a certain bias.

This bias prompts them to espouse such absurd causes. They feel that like their scriptures; Vedas too, contain historical records in these divine books. They are in the habit of tracing back customs of later periods. Their motive is to somehow lower the sanctity of these divine scriptures so as to bring them to the level of tribal gospel. Their non-vegetarian justification is drawn out of their habits and traditions. They also use modern science to demonstrate that non-vegetarian diet provides more proteins and a better quality food required for bodybuilding. They have a deep faith in the efficacy of life killing sacrificial rituals for gaining divine grace. This very image

they probably want to see reflected in the vedas also.

The tradition of performing "Yajna" has come handy to them for pursuing these designs. Vedic "Yajna" for them is a mere ritual for gaining piety, and virtue is just like a simple sacrifice for them. There a bull was sacrificed for offering to God; likewise, an animal must be killed here for offering to the sacred fire. With this thinking in mind, they start translations being subjective in nature (not objective), are malicious and untrustworthy.

In Vedic Index, Vol. II, (page 145), we find the following assertions:

"The eating of flesh appears as something quite regular in Vedic texts which shows no trace of doctrine of 'ahimsa' or abstaining from injury to animals, for example, the ritual offerings of flesh contemplate that the Gods will eat it, and (again the Brahmas at the offering.")

The above statement asserts : (a) Vedic text shows no traces of doctrine of 'ahimsa' (b) eating of flesh appears quite regular in vedic texts; and (c) the ritual -offerings of flesh-contemplates that the Gods will eat it. All these assertions as shown by the evidence already deduced are incorrect. In fact the third assertion directly concerns the "Vedic Yajna" and shows that western thinkers have no notion of what a Vedic Yajna 'really was. For them, meat offering was an intergral part of a "Vedic Yajna".

Such concepts are wrong and totally misleading. 'Vedic Yajna' was a concept of awakened spirit of total development sacrifice for the welfare all (vide 'Yajurveda' XVIII-29)

WHY BOTH MIND AND BODY NEED LOOKING AFTER

-Sri Ashutosh Maharaj

The physical body being grosser appears to have controlling switchboard is in the mind. From the biological point of view, the human body is a dense network of nerves, cells, veins and other constituents all interconnected with each other. It has also the ability to constantly repair and renew itself. If all cellular reactions are optimum and perfect, one can lead a disease-free life. Our mind exercises direct control over all biochemical reactions taking place in our body. Our thoughts, emotions and feelings leave their impact on the biological system. For instance, the feelings of fear in us lead to the gush of the hormone adrenaline; the feelings of stress cause the release of the hormone cortisol; the feelings of laughter increase endomorphin levels; anger and annoyance, raising cholesterol level and blood pressure increase the risk of fatal heart attacks or strokes.

Every emotion or feeling has the tendency of altering or modifying our biochemical profile. In short, our body is the physical outcome of all our thoughts and emotions we have been rearing in our mental plane, as is depicted in the famaous adage: Belief creates biology. in other words, our physical body can be described as the manifestation of emotions or the three-dimensional projection of our mental thoughts, as Shakespeare put it. We are such stuff as dreams are made of. Thus, our very body cell is influenced by the way we think and feel. In addition, our all thoughts, emotions, and feelings get stored up in the vibration code of our cells.

The human mind is like a double-edged sword where its potentialities, if mishandled, can cause so much of havoc in the form of diseases. At the same time, the effective utilisation of its potentialities can help in eliminating anxiety. panic attacks, and stress.

The mind is equipped with incredible power that can change life. It is like the creating power-machine, which can create anything ranging from the worst to the best. The worst gets menifested when the mind is overwhelmed with negativities

propagating anxiety. worries, and depression, which further shoot up into various forms of diseases.

Generally, anxiety, stress, worry etc, all need just a single negative thought for their ignition. But, often, you don't get aware of that negative thought; instead, you sense this negativity when it has assumed some other worse state like headache or stomach ache.

The need is to control negative thoughts before they reach their summit in the form of variegated ailments. However, negative thoughts can be controlled by bridling the mind with the help of proper meditation techniques emphasised in Divine Knowledge, which in turn can be achieved by the grace of a perfect master only. The mystical effect of Divine knowledge then churns out your positive tendencies, enabling you to extract the most out of your life. It trains and develops your life. It trains and develops your mind; keeping it disease-free and stress free. It makes you lead a healthier and more productive life while keeping diseases at bay.

****

KRIYATMAK YOGA PRASHIKSHAN SHIVIR(ROJAR)

Kriyatmak Yoga Shivir was held at Rojar, Distt. Sabarkantha, Gujrat from 6th-12th April,2015. Shri B.D.Ukhul and Shri Ramesh Arya of C-3 Aryasamaj,Janakpuri set out to attend this shivir by Rajdhani Express on the evening of 4th April. After reaching Ahmedabad we caught a bus for Rojar village and reached at the Vanprasth Sadhak Ashram by 1.00 P.M. The participants deposited their mobiles while formal registeration and were advised to observe maun (silence) during the shivir. There were 176 male and 110 lady participants. The daily routine started at 4.00 A.M. with recitation of morning vedic prayer and ended with evening prayers at 9.30 P.M. Upasana(meditation) classes were taken by Ach.Satyajitji; Kriyatmak Yogabhyas by Ach.Gyaneshwarji; Gyan, Karm,Upasana by Ach.Sandeepji; Yog-darshan by Sw.Muktanandaji; Upasana & Vedic Sandhya recitation by Aryaveer Arunji. Shanka Samadhan sessions were held by

Ach.Satyaji and Inspiring Lectures on our National and Social Responsibility were delivered by Ach. Gyaneshwarji. Daily Yajna was performed by select participants followed by a sermon by revered Swami Satyapatiji(now 89 yrs.) who dwelt on the topic of attainment of Moksha through yog-sadhana, particularly espousing the importance of Gayatri-mantra with their explanation. We were served cow's milk with breakfast and after evening meals. The food was simple and nourishing. The shivir proved to be very useful and added to our limited knowledge and removed our doubts. Strict schedule of classes was maintained and on concluding day participants narrated their experience. This Ashram was established in 1999 but Yogdarshan Mahavidyalaya commenced in 1986 by Swami Satyapatiji. On 12th evening. We visited Yog-darshan Mahaviyalaya where a Gau-shala has 80 cows and it has numerous trees of cheeku and chandan trees are in the offing. Some farming is also done on these premises and products are used by the inhabitants of the Gurukul and Ashram.The environment is very calm and quiet befitting spiritual persuits, sadhana & swadhyaya. We returned by Rajdhani on 13th night after a quick visit to Ahmedabad Aryasamaj(near Raipur darwaza) and local important place

-B.D. Ukhul

Sw. Satyapati ji Speaking to Shivirarthis

Brahmacharis offering Yajna-ahuti at Agnihotra Prashikshan Kendra

Date of Pubn. : 30.4.2015 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 May. 2015
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋषि–वि वामित्रः, देवता–सविता, छन्दः – दैवी बहती

हे सर्वरक्षक, प्राणस्वरूप, दुःख विना ाक, सुखस्वरूप परमे वर! आप हमें प्राणों से प्यारे हैं। आप हमारे जीवनाधार हैं। आप हमें सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करते हैं। हे भगवन्! ऐसी कृपा करें कि हम हमे ाा आपके गुणों का ध्यान करें और आपके तेज को धारण करें। आपसे हमारी प्रार्थना है कि आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

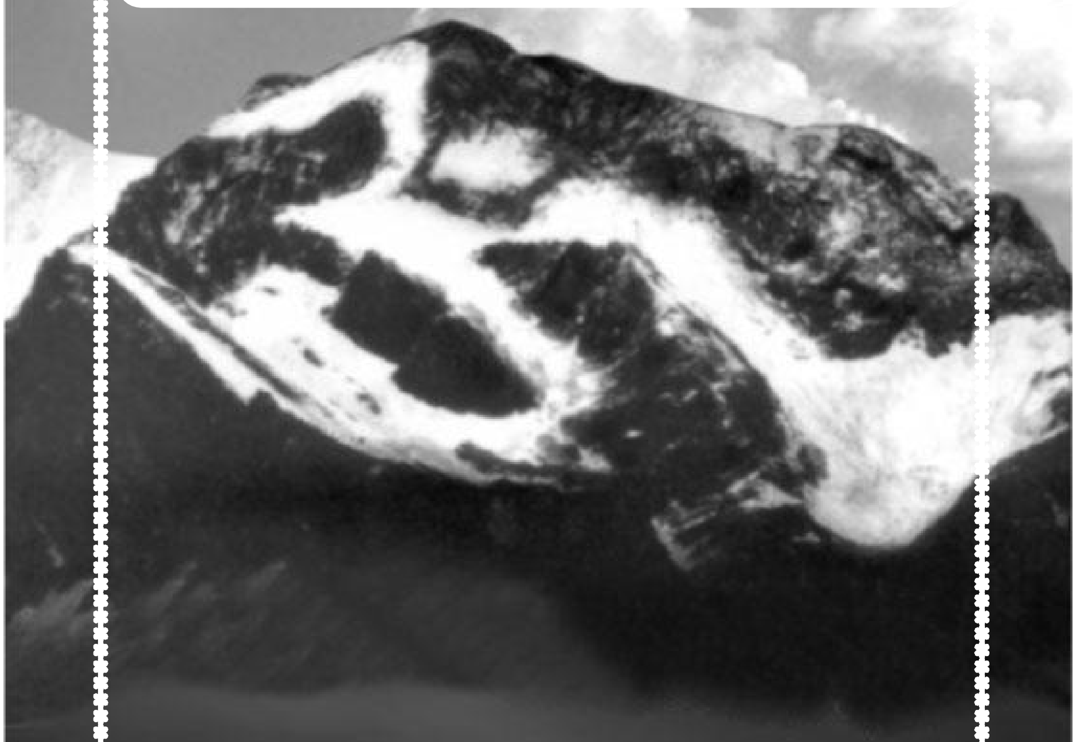

Oh Almightly God, Creator of the universe, giver of light and life, we request You to guide our intellect along the righteous path.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58